डॉ सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, सोमनाथ महिला कालेज, सासाराम
समाजशास्त्र विभाग, ग्रामीण समाजशास्त्र, पार्ट - II, बी०ए० (H), खण्ड - III

ग्रामीण एवं नगरीय जीवन में अंतर – सामान्यतः समुदाय को दो भागों में बांटा जाता है – ग्रामीण तथा नगरीय। प्रत्येक मनुष्य इन दोनों में से किसी एक प्रकार के समुदाय में निवास करता है। ग्राम और नगर मानव जीवन के दो पहलू हैं। गांवों का प्रकृति से प्रत्यक्ष और निकट सम्पर्क पाया जाता है जबकि नगरों में कृत्रिमता की प्रधानता होती है। विभिन्न कसौटियों के आधार पर हम यहां ग्रामीण एवं नगरीय जीवन में भेद स्पष्ट करेंगे –

(1) सामाजिक संगठन में अंतर (Difference in Social Organization) – ग्रामीण एवं नगरीय सामाजिक संगठन की प्रकृति एवं आधारों में भेद पाया जाता है –

(A) परिवार – गांवों में परिवार अधिकांशतः संयुक्त होते हैं जिनमें मुखिया की सत्ता सर्वोपरि एवं महत्वपूर्ण होती है। परिवार ही वहां व्यक्ति की सामाजिक स्थिति निर्धारित करता है। दूसरी ओर नगरों में व्यक्तिवाद की प्रबलता के कारण छोटे-छोटे परिवारों की बहुलता पाई जाती है। गांवों की अपेक्षा नगरों में वंश का महत्व भी कम होता है।

(B) विवाह – गांवों में विवाह दो परिवारों को जोड़नेवाली कड़ी होती है। विवाह के निर्धारण में परिवार-जनों एवं रिश्तेदारों का का महत्वपूर्ण हाथ होता है। गांव में अधिकांशतः व्यक्ति अपनी ही जाति में विवाह करता है। इसके विपरीत नगरों में ~~विवाह~~ विवाह दो व्यक्तियों का व्यक्तिगत मामला ~~समझा~~ समझा जाता है और विवाह निर्धारण में लड़के व लड़की की इच्छा को अधिक ~~महत्व~~ महत्व दिया जाता है।

(C) स्त्रियों की स्थिति – गांवों में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति निम्न होती है। वे वहां पर्दा की प्रथा का पालन करती हैं तथा उनकी दुनिया घर की चहारदीवारी तक ही सीमित होती है। दूसरी ओर नगरों में स्त्रियां अधिक शिक्षित एवं स्वतंत्र होती हैं। स्वयं अर्जन के कारण वे आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर होती हैं।

(D) पड़ोस – गांव में पड़ोस का अधिक महत्व होता है नगरों में पड़ोस अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता यहां तक कि

PAGE NO.: 02
DATE: / /

कई पड़ोसी तो एक दूसरे को जानते तक नहीं।

~~व्यवसाय~~ – (1) व्यावसायिक संरचना – गांवों में व्यावसायिक संरचना का आधार जाति है। वहां अधिकांश लोग कृषि करते हैं। अतः संरचना का एक आधार कृषि व्यवस्था भी है जिसमें एक तरफ किसान किसान और दूसरी तरफ जमींदार होते हैं। नगरों में वर्ग व्यवस्थाओं के आधार पर संरचना पाया जाता है। नगरों में विषमता अधिक है।

(2) सामाजिक नियंत्रण में अंतर (Difference in Social Control) – गांवों में सामाजिक नियंत्रण बनाये रखने में अनौपचारिक साधनों जैसे परिवार, जाति, पंचायत, पड़ोस, धर्म आदि का प्रभाव अधिक होता है। नगर में नियंत्रण बनाये रखने के लिए औपचारिक साधनों जैसे पुलिस, जेल, कानून, न्यायालय, सरकार आदि का सहारा लिया जाता है।

(3) सामाजिक संबंधों में अंतर – (Difference in Social Relations) गांवों में जनसंख्या की कमी के कारण सभी लोग परस्पर एक दूसरे को जानते हैं। उनमें प्रत्यक्ष, प्राथमिक, अनौपचारिक एवं वैयक्तिक संबंध पाए जाते हैं। नगरों में जनसंख्या की बहुलता के कारण व्यक्तिगत सम्पर्क का अभाव पाया जाता है। वहाँ व्यक्ति को महत्त्वहीन किया जाता है। शहरी जीवन यंत्रवत चलता रहता है। अतः वहाँ अप्रत्यक्ष, औपचारिक, अवैयक्तिक एवं द्वैतीयक संबंध पाए जाते हैं।

(4) सामाजिक अंतःक्रिया में अंतर (Difference in Social Interaction) गांवों में प्राथमिक एवं प्रत्यक्ष सहयोग अधिक पाया जाता है। नगरों में श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण के कारण द्वैतीयक एवं अप्रत्यक्ष सहयोग पाया जाता है। गांवों में प्रत्यक्ष संघर्ष पाया जाता है और लोग शीघ्र ही मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। नगरों में अप्रत्यक्ष संघर्ष अधिक पाया जाता है। वहां मानसिक संघर्ष एवं शीतयुद्ध की स्थिति अधिक देखने को मिलती है। गांवों की अपेक्षा नगरों में सहिष्णुता अधिक होती है अतः वहां विभिन्न व्यक्तियों एवं समूहों के बीच सामंजस्य अधिक पाया जाता है। ग्रामीण लोग रूढ़िवादी एवं परम्परावादी होते हैं। अतः वे नये विचारों एवं परिवर्तन को शीघ्र स्वीकार नहीं करते हैं। ग्रामों की अपेक्षा नगरों में आत्मसात की प्रक्रिया तीव्र होती है।

प्रश्न Pg. No. 2 के बाद आगे